अभिव्यक्ति

सौभाग्य है मेरा कि मुझे परमात्मा ने विधानसभा के प्रथम नागरिक के रूप में सेवा करने का अवसर दिया।

संकल्प है हमारे दल (भारतीय जनता पार्टी) के जनप्रतिनिधियों एवं गणमान्य नागरिकों की भावना अनुसार क्षेत्र वासियों की सेवा करते हुए कुछ श्रेष्ठ कर सकूं।

विश्वास है मुझें मेरे समस्त जनप्रतिनिधियों एवं कार्यकर्ताओं पर जो अपने अपने क्षैत्र की प्रमुख मांगों को पूर्ण कराने में अपने सेवा भाव सहित **सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास** की परिकल्पना को सार्थक कर सकें।

कामना करता हूँ कि विधानसभा के अधिकारियों/कर्मचारियों से कि वे सरकार द्वारा पारित विकास कार्यो/योजनाओं को समय सीमा में पूर्ण गुणवत्ता से पालना करवाएं एवं अपनी पूर्ण निष्ठा एवं ईमानदारी से अपना कर्त्तव्य पालन करें।

अपेक्षा है क्षैत्र की सभी स्वयंसेवी संस्थाओं से कि वे अपने संगठन के उद्देश्यों के अनुसार सेवा एवं संस्कारो की भावना से नियमित कार्य करते रहे। अपनी कार्यकारिणी के प्रस्तावों को नागरिकों के हित में गरीब, कमजोर, उपेक्षित, मूक बधिर पशुओं के हित में क्रियान्वित करे। आदिनांक जो सहयोग आपका रहा है उसमें और भी वृद्धि हो।

विनती है विणज व्यापार में लगे व्यापारियों, दुकानदारों व अस्थायी लारी वालों से कि वे अपने संस्थानों के सामने अनावश्यक सामान या निजी वाहन नहीं रखें। यह क्षेत्र आपका है और आपके सहयोग से ही आन्तरिक सुन्दरता व स्वच्छता को बनाए रखा जा सकता है।

अनुरोध है विधानसभा के प्रत्येक नागरिक से, प्रत्येक परिवार से, प्रत्येक संस्थान के मुखिया से कि वे स्वच्छता के सभी घटकों (व्यक्तिगत स्वच्छता, पारिवारिक स्वच्छता, गली मौहल्लों की स्वच्छता संस्थान की आंतरिक व बाह्य स्वच्छता) की पूर्ण गंभीरता से पालना करेंगे। स्वच्छ भारत अभियान के सफल क्रियान्वयन में सुनागरिक की हैसियत से अपना योगदान देंगे।

आगाह करता हूँ उन अतिक्रमियों को, उन बेतरतीब खड़े करने वाले वाहन मालिकों को, अपने संस्थान के बाहर दिनभर के लिए वाहन या लॉरी खड़ी कर आवागमन को बाधित करने वालो को, बिना सक्षम अनुमति के निर्माण करने वालों को, पशुधन को नगर में खुला छोड़ने वालों, सरकारी भूमि पर अतिक्रमण करने वालों, राजकीय सम्पति का विरूपण करने वालों को कि वे नगरपालिका की सक्षम स्वीकृति प्राप्त कर ही निर्देशानुसार कार्य करें। अन्यथा उनके विरूद्ध कडी कानूनी कार्यवाही अमल में लानी होगी।

आशीर्वाद है मेरा उन बाल गोपालों व विद्यार्थियों को कि वे सार्वजनिक बाग बगीचों का समुचित उपयोग करते हुए इनकी स्वच्छता एवं सौन्दर्य विकास में अपना योगदान दे। अपने अभिभावकों व गुरूजनों की भावनारूप लक्ष्य अर्जित कर परिवार व नगर का नाम प्रकाशित करें। आप ही देश की वो भावी पीढी हो जिन्हें आने वाले कल के लिए सुन्दर विकसित व सक्षम भारत की परिकल्पना को साकार करना है। ''राष्ट्र देवों भवः'' की भावना से देश हमे देता है सब कुछ हमे भी तो कुछ, देना सीखें के ध्येय को सार्थक बने। राष्ट्र भाव को सर्वोपरी मानें।

सपना है हमारा कि हम सब 36 कौम के लोग मिलकर अपना सुनागरिक कर्त्तव्य निर्वहन करते हुए सुमेरपुर विधानसभा क्षेत्र को को शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार, बिजली, पेयजल, स्वच्छता के सभी घटक क्षेत्रों में पूर्ण सुविधायुक्त सेवाओं की प्राप्ति व वितरण में अपना यथायोग्य योगदान दें। विभिन्न मेलो व त्यौहारों पर आपसी सौहार्द व सामन्जस्य से नगर की मर्यादित परम्पराओं का निर्वहन करें। शांतिपूर्वक 'जीओ और जीने दो' की भावना से अपना उतरदायित्व पालन करें।

प्रार्थना है उन बड़े बुर्जुगों, वरिष्ठ नागरिकों, अनुभवी लोगों से कि वे अपने जीवन के अनुभवों का अपनी नई पीढ़ी को लाभ दे। शिक्षा व संस्कारों का जीवन में महत्व क्या है ? बताएँ। व्यापार हो या अन्य कोई भी कार्य उसमें केवल लाभ **(Profit)** ही सबकुछ नहीं होता। लोगों की अधिकाधिक सुविधा, सहायता व तत्संबंधी सुन्दर सलाह देकर भी हम सेवा कर सकते है।

सारी धरा भी साथ दे तो और बात है पर तू जरा भी साथ दे तो और, यू तो चल लेते है लोग एक पांव से पर दूसरा भी साथ दे तो और बात है।

(जोराराम कुमावत)
विधायक
विधानसभा क्षेत्र सुमेरपुर

सुमेरपुर इतिहास के झरोखें से

विश्व की भव्य भूमि भारत के गौरवशाली इतिहास के सर्वाधिक स्वर्णिम पृष्ठों में लिपिबद्ध रणबांकुरे राजस्थान की शौर्य एवं पराक्रम से वर्णित गाथाएँ हमें अपने पूर्वजों के अद्वितीय बलिदान को नमन करने एवं उनके सिद्धान्तों को जीवन में अपनाने को प्रेरित करती है।

रणभूमि राजपुताना की मरूभूमि मारवाड़ के प्रतापी राठौड़ राजवंश के प्रजावत्सल राजा सरदारसिंहजी के ज्येष्ठ पुत्र महाराजा सुमेरसिंहजी के (5 अप्रैल 1911 को) अल्पायु में राजा बनने के कारण महाराजा प्रतापसिंहजी (सरप्रताप) को रिजेंट (अभिभावक) नियुक्त किया गया।

राज्य की समुचित प्रबंध व्यवस्था की प्रक्रिया में रियासत के दक्षिणी छोर में बहने वाली सदानीरा जवाई नदी की उपयोगिता समझने, पडौसी रियासत सिरोही के महाराजा शिवसिंहजी के नाम से 1910 में शिवगंज शहर बस जाने, सरसब्ज क्षेत्र की पैदावार का समुचित विपणन करने वाले व्यापारियों को संबल देने, तुर्की के बंदी सैनिकों को रखने हेतु एरनपुरा रोड के निकट बंदीगृह बनाने के उद्देश्य से चैत्र कृष्णा द्वादशी (15 मार्च 1912) को महाराजा सुमेरसिंहजी व उनके रिजेंट सरप्रताप ने सुमेरपुर नगर की स्थापना हेतु वर्तमान भैरूचौक नामक स्थान पर विधिवत भूमि पूजन कर शिलान्यास किया।

नगर की स्थापना में तत्कालीन उन्दरी ठिकानें के जागीरदार ठा. बख्तावरसिंहजी जिन्हें उन्दरी खालसा कर बदले में ठि. जादरी की जागीर दी गई, सेठ पनराजजी सुराणा जिन्हें नगर सेठ की उपाधि व गणेशरामजी माली जिन्हें गांव चौधरी की उपाधि देकर तत्संबंधी जिम्मेदारी दी गई। आस पास के गाँवों की विभिन्न जातियों ने रूचि के साथ पट्टे लेकर यहां बसना शुरू किया। प्रथम विश्वयुद्ध (1914–18) के मध्य अंग्रेज शासकों द्वारा युद्ध बंदियों को रखने से यहां निवासियों को थोड़ी असुविधा भी हुई थी, हालांकि उन्हें राज्य की तरफ से यथायोग्य मुआवजा दिया गया था, परन्तु युद्ध समाप्ति पर पुनः अपने अपने आवासों में स्थापित हो गये।

आधुनिक मारवाड़ के जनक महाराजा उम्मेदसिंहजी साहब द्वारा जोधपुर की पेयजल समस्या के स्थायी समाधान करने, कृषि उपज बढ़ा कर किसानों की आर्थिक स्थिति सुधारने, रियासत में कृषि उपज का अधिक उत्पादन करने एवं दक्षिणी मारवाड़ के लोगों को अधिकाधिक रोजगार देने के उद्देश्य से अरावली की पहाड़ियों से निकलने वाली सदानीरा जवाई नदी पर जवाई बांध बना कर प्रजावत्सल राजा के रूप में जो जन हितैषी महान कार्य किया था आज हम सभी नगर व क्षेत्र वासी उनके ऋणी है।

यह तय है कि यदि जवाई बांध नहीं बनता तो यह बाजार नहीं पनपता, यह बाजार नहीं पनपता तो यह कृषि उपज मण्डी नहीं बनती, यह मण्डी नहीं चलती तो कृषि कार्य से जुड़ी समस्त दुकाने, संस्थान और शोरूम नहीं चलते। अपनी स्थापना के 105 वर्षो में नगर के स्वरूप का इतना विस्तारित होना कमो बेश इसी जवाई बांध और कृषि उपज मण्डी का प्रताप व प्रभाव है। उनकी यादगार चिरंजीव करने के लिए कृषी मण्डी का नाम महाराजा श्री उम्मेदसिंह कृषि मण्डी से नामकरण किया गया साथ हि पालिका द्वारा भव्य आदमकद अष्ठधातु की मूर्ति बनाकर श्रद्धानवत किया। हम कृतज्ञ भाव से उनका आभार प्रकट करते हैं।

पाली जालोर सिरोही जिलों के केन्द्र बिन्दु में स्थित हमारा यह नगर दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति कर रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद लोकतांत्रिक व्यवस्था में प्रथम सरपंच के रूप में श्री बाबूलालजी राजगुरू से लेकर नगरपालिका के गठन तक सदैव शहर का विकास बढ़ता ही रहा है, फूलता ही रहा है, फलता ही रहा है। 1986 में गठित 20 वार्डो की नगरपालिका ने अपने अपने कार्यकाल में क्षमता अनुरूप कार्य करने का प्रयास किया। 2009 में वार्डो का परिसीमन कर 25 वार्डो के रूप में पार्षदों का प्रतिनिधित्व मिला।

आओ आप और हम इस नगर के उज्ज्वल इतिहास से प्रेरणा लेते हुए अपने वर्तमान स्वरूप को सुन्दर, साफ सुथरा व आकर्षक बनाएँ एवं आने वाली पीढ़ी को ''स्मार्ट सीटी'' जैसा आधुनिक सुख सुविधा युक्त नगर सौंप कर अपना कर्त्तव्य निभाएँ।